MODULE 9

प्रकृति

व्युत्पत्ति

→ 'प्र' उपसर्ग पूर्वक 'कृ' धातु ।

• Is one among दशविध आकृतपरीक्षा

→ प्र + कृ + ति
↓ ↓ ↓ तामसगुण
सत्वगुण रजसगुण

निरुक्ति

1. प्रकृति शरीरस्वरूपम् । (अरुणदत्त on अ हृ सू 1/10)

प्रकृति means individual's nature

2. प्रकृतिश्च आरोग्यम् । (च वि 6/13)

It indicates health.

Synonyms.

पिण्ड, स्वभाव, योनि

प्रकृति in Ayurveda is expression of a person in context to morphology, physiology, behaviour & relation to ecology.

Phony
Phenolype → Genotype + Epigenetic factors [Intra Uterine, Extra Uterine]

Formation of प्रकृति [Role of दोषs in the formation of प्रकृति of an individual]

शुक्रशोणित संयोगे यो ह्यावेद् दोष उत्कटः ।
प्रकृतिजनयेत् तेन । (सु शा 4/63)

Scanned by CamScanner

Scanned with OKEN Scanner

Doshika predominance, ab the time of conjug-
of sperm and ovum, determines प्रकृति

शुक्रार्तवसंयोगे तु गर्भाशये विशेषेण विषक्तयोः।
तत्र यः तिष्ठः प्रकृत्या हीनमध्योत्तमा पृथक्॥
शरीरेषु: समस्तासु श्रेष्ठा नित्या द्विदोषजाः।

- Formed/determined ab time शुक्रशोणितसंयोग (अ हृ शा 1/9-10)
- Just like विषप्रकृति arise from विष
- 3 types → हीन - V
  → मध्यम - P
  → उत्तम - K
- शरीरेषु (बहुवचन) — श्रेष्ठ
- द्विदोषज (VP, PK, UK) — नित्य

Definition of प्रकृति (10 Mark, 3 Mark)

प्रकृतिर्नाम गर्भशरीरसमवायिनी
गर्भविक्रान्तिनियमे स्वभावोद्रेककारिणी
निर्विकारिणी दोषाश्रयिणी॥
[विमानस्थान सूत्र 16]

प्रकृति is nonpathological states of दोष, which is inherent in the individual from birth till death, which is distinct since the time of fertilization, which is influenced by maternal & paternal factors.

समधिष्ठानलक्षणाः केचिद्रूक्षादि गात्राः।
दृश्यन्ते वातजाः केचित्कृशा लोलकपाटनाः॥
तेषामनातुरा पूर्वे, वातजाद्या अयातुराः।
दोषानुशयिता ह्येषां देहप्रकृतिरुच्यते॥
(च वि 7/39-40)

Scanned by CamScanner

Scanned with OKEN Scanner

- Some are जन्मप्रकृति (जन्म PVK) from time of conception
- Some are बालप्रा, पित्तप्रा or श्लेष्मप्रा
- जन्मप्रकृति are अनातुर (Not आतुर = healthy)
- बालप्राद्या (eh) are सदातुरा (alway आतुर-diseased)

दोषानुशायिता हि प्रायेण देहप्रकृतिरुच्यते । - according to predominance (अनुशयिता means dose connection) of दोषाs, diff देहप्रकृति people shows some psychosomatic expressions

स्थिरत्व of प्रकृति

प्रकोपो वा अन्यथाभावो धातो वा नोपजायते ।
प्रकृतीनां स्वभावेन, जायते तु गतायुषा: ॥

Features of body constitution (सु शा 4/78)

doesn't undergo increase (प्रकोप), decrease (क्षय) or अन्यथाभाव (alterations) naturally. It happens only in a dying person (गतायुषा:) ⟵ अरिष्टलक्षणs — during the time of death, normal physical characteristic features may change, they are known as अरिष्टलक्षणs].

प्रकृतिनिर्माणावस्थाव [Factors influencing formation of प्रकृति]

2 factors → Intrauterine factors
2 factors → Extrauterine factors

Intrauterine factors

शुक्रशोणितप्रकृति बलाधिक्यशिशयप्रकृति मातृसहारविहारप्रकृति,
गर्भाशयविकारप्रकृति च गर्भशरीरमापेक्षते ।
(च नि 8/95)

Scanned by CamScanner

Scanned with OKEN Scanner

The foetus gets afflicted with one or more of the factors which are dominants, and the physical constitution of the individual is determined.

① शुक्रशोणितप्रकृति
② कालगर्भाशयप्रकृति
③ गर्भाम्बुविकारप्रकृति
④ मातृआहारविहारप्रकृति

शुक्रशोणितप्रकृति

- शुक्र & आर्तव (sperm & ovum) should be of good quality at the time of conception. To achieve this married couple should plan for ideal conception. to get a healthy progeny.

शुद्धशुक्र : स्फटिकाभं द्रवं स्निग्धं मधुरं मधुगन्धी च।
शुक्रमिच्छन्ति कोविदाः तत्पक्षौद्रनिभं तथा॥
(च शा 2/13)

शुद्धार्तव : शशासृक्प्रतिमं तु यद्वा पाञ्जारसोपमम्।
तदार्तवं प्रशंसन्ति यद्वर्णो न विरुध्यते॥
(सु शा 2/17)

कालगर्भाशयप्रकृति

काल (External seasonal climate) & गर्भाशय (Normal healthy condition of female reproductive system) are also necessary for the proper embryonic development

~~शुक्र~~ काल

- आदान / विसर्ग काल (वय)
- काल in relⁿ to गर्भ (चय प्रकोप)

Scanned by CamScanner

Scanned with OKEN Scanner

ऋतुविचार

- ऋतुकाल q menstrual cycle is needed for conception
- Proper age q both partners are also a main factor
- Time q intercourse also influences the prodcb q conception

आहारविहारप्रभाव

- आहार (diet)
- विहार (Activities) } q a pregnant woman have influence on foetal development: The wholesome आहार, विहार results in उत्तमप्रकृति

कालानुविधप्रकृति

Dominance q कालानुबंध, at time q conception, determines the प्रकृति q a person.

प्रकृतिरिह नराणां त्रौणिकी केचिदाहु:।
पवन दहन तोयै: कीर्तितास्तु त्रिधा:॥
स्निग्धविपुलशरीर: पार्थिवाश्च क्षमावान्।
शुचिश्च चिरंजीवी नाभसः खेमदृष्टि:॥
(अ शा 4/अ)

मदाक्रान्त ~~शार्दू~~ प्रकृतिलक्षण

पवन (वायु)
दहन (तेज)
तोय (जल) } IIIrd Lo V, P, K लक्षणs.

पार्थिव (पृथ्वीकर्म्म) स्निग्धशरीर, विपुलशरीर, क्षमावान्
नाभस: (आकाशकर्म्म) शुचि, चिरञ्जीवी, मन्द खें:

Scanned by CamScanner

Scanned with OKEN Scanner

Extraculerine factors influencing प्रकृति

तत्र प्रकृतिर्जातिप्रसक्ता च, कुलप्रसक्ता च, देशानुपातिनी-
कालानुपातिनी च, वयोऽनुपातिनी च, प्रत्यात्मनियता चेति।
जातिकुलदेशकालवयः प्रत्यात्मनियता हि तेषां पुरुषाणां
ते ते भावविशेषा भवन्ति।

(च शारीर 1/45)

The following extraculerine factors have influence on प्रकृति.

1. जातिप्रसक्ता : Caste and race affects constitution of a [eg. phenotype of a specific community people]

2. कुलप्रसक्ता :- Influence of genetic set up of a family
eg. Heights, colour of hair eh

3. देशानुपातिनी :- Geographical climate have influence on body constitutions eg. Africans, Indians

4. कालानुपातिनी :- Climatic variations in different seasons

5. वयोऽनुपातिनी :- Age have influence on constitution, as per their दोष predominance in different eg P in Middle age

6. प्रत्यात्मनियता :- Although we have grouped the populations in several main types of constitution, we must know that each human being has his unique nature ie constitution

+
अ ॅं ष्ण ? → (वात) → Every human being have diff strength depending on geographical area, season age eh

Scanned by CamScanner

Scanned with OKEN Scanner

One or more of these factors are observed to be so strong that, ~~they~~, inspite of other type of प्रकृति, दोषादि प्रकृति strongly exhibit their characteristics.

classification of देह प्रकृति

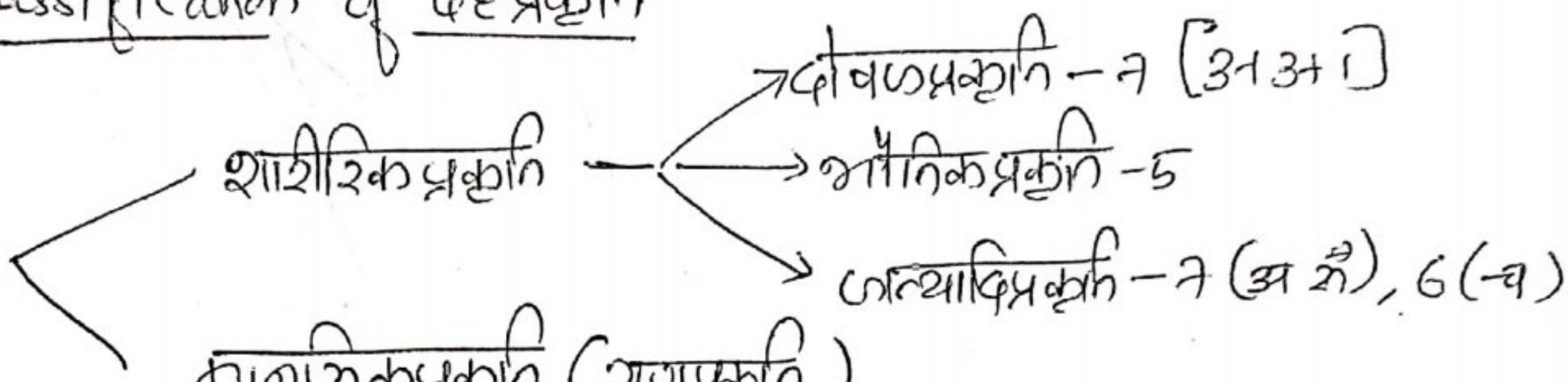

→ सात्विक - 7 +, राजसिक - 6 + तामसिक - 3
(च शा 4/36, 37, 38)
सु शा 4/17, 18

→ सात्विक, राजसिक, तामसिक - 3
सत्वप्रकृति, रजःप्रकृति, सत्वतम - 3
सत्वरजतम — 1
7 (अ सं शा 8 / नागार्जुन)

वातप्रकृति पुरुष लक्षण

प्रायेण रूक्ष पतनाद्युषिता मनुष्या
द्वेषात्मकाः स्फुटितस्फुरकेशगात्राः।
शीतद्विषश्चलधृतिस्मृतिबुद्धिचेष्टा-
औदर्दृतिर्गतयाति बहुप्रलापाः॥
अल्पार्थितल्पजीवितनिद्राः
सकृशक चलजटिरवाक्षः।
नास्तिका बहुमुखः सविलासा
शीतहासकृशयाक्षलिलोपाः॥
मध्यूरुम्लपदवो विरात्र्यकाङ्गः।
कृशदीर्घकृतयः सशब्दयानाः।

Scanned by CamScanner
Scanned with OKEN Scanner

न दृढा न जितेन्द्रिया न चार्या
न च कान्तादयिता बहुप्रजा वा ॥
नैत्राणि चैवां सदृशक्षराणि
वृत्तान्यचारूणि मृतोपमानि ।
उन्मीलितानीव शवानि शुष्के
शैवद्रुमास्ते गगनं च यान्ति ॥
अल्पव्यया मत्सरसंमताः स्त्रीणां प्रोद्भूतपिण्डकाः ।
श्वेतश्मश्रुलोद्भूतहृद्याः खुरकाकानुकाश्च वाजिका ॥

(अ ह शा 3/85 89

+1 page

Scanned by CamScanner

Scanned with OKEN Scanner

पित्तप्रकृतिपुरुषलक्षणम्

पित्तं वातिकं वा यकृत्मा -

तिक्तौष्णिकाक्षीक्षणदृग्विभाक्तुः ।
शूरो मानी पिङ्गकेशोल्परोमाः ॥
कोपिनमाल्यविलेपनभक्तः
शुचिराग्निवत्मलः ।
विगतसाहसबुद्धिबलान्वितो
भवति नीचुगतिर्विषतामपि ॥
मेधावी प्राशिपित्तसारबलवर्णमांसो
नारीणामभिमतोल्पशुक्रकामः ।
आवासः पलितरुङ्नीलिकानां
भक्तुं क्षमं मधुरकषायतिक्तशीतम् ॥
धर्मद्वेषी स्वेदनः पूतिगात्र्य
भूर्युच्चाक्षोष्यपानाशनोवर्चः ।
मृदुः पश्यत्कणिकारोल्पपित्तारक्त
दृग्दन्तत्वक्पित्युकोल्पाश्च ॥
तन्वङ्गि पिङ्गानि चलानि चैषां
तन्वल्पबद्धमाणि दृमप्रियाणि ।
प्रत्येकशः सर्वशः स्वैश्च भागै
रागं व्रजन्त्याशु विलोचनानि ॥
मेधायुर्वा मेधबलाः पण्डिताः क्लेशसहिष्णवः ।
व्यावृत्तकपिमार्जारयक्षानुकाश्च पैत्तिकाः ॥

(अ हृ शा १०-१५)

Scanned by CamScanner

Scanned with OKEN Scanner

श्लोकाप्रकाशं पुरुष लक्षणं

श्लेष्मा श्लोमाः श्लेष्मलस्तेन श्लोम्यो ।
गुढश्लिष्यश्लिष्टसन्धिर्दृढांग ।
क्षुतृड्दुःखक्लेशधामैरितरो
बुद्ध्या युक्तः सात्विकः सत्यसन्धः ॥
प्रियङ्कुर्दूर्वाशरकाऽऽशास्त्र-
गोशचणापद्मसुवर्णवर्णः ।
पृथुपीनवक्षा
मदाल्पमादो घननीलकेशः ।
मृदङ्गः श्रमसुविशाकचारुदंष्टो
बह्वोजोरतिरराशुक्रपुत्रभृत्यः ।
क्षमात्मा वक्ति न निष्ठुरं च जातु
प्रच्छन्नं वहति दृढं चिरं च वैरम् ॥
समदृष्टिरदैन्यकुल्यधातो
स्थपतिर्मेधिमृदङ्गश्लिष्टबाहुः ।
स्मृतिमान्नियोगवान् विनीतो
न च बाल्येऽतिनिशेदुषो न लोलः ॥
तिक्तं कषायं कटुकोवणरूक्ष-
मल्पं च भुङ्क्ते बलवांस्तथाऽपि ।
रक्तान्तसुस्निग्धविशालदीर्घ
स्फुल्यक्षरक्षुल्लशिरापक्ष्मलाक्षः ॥
अल्पव्याहारक्लोल्पाश नाशनेः
प्राज्ञायुक्तो दीर्घदर्शी वदान्यः ।
~~श्रद्धा~~ गम्भीरः स्फुलत्कलाः क्षमावा-
नार्यो निष्क्रान्तुकीर्विसूत्रः कृतज्ञः ॥

Scanned by CamScanner

Scanned with OKEN Scanner

ऋजुर्विपाश्चित्सुमगः सुपर्ण्यो
भाक्तो गुरुत्मां॑ स्थिर सौदक्षश्च ।
स्वर्ण सायकान्साविहस्तकाल्पा
स्तोयाशयान् पश्यति तोयकांश्च ॥

~~ब्रह्मा~~
ब्रह्मरुद्रेन्द्रवरुणाता क्थर्हिंसगजाध्यैः ।
श्लेष्मप्रकृतयस्तुल्यास्तथा सिंहाश्वगोवृषैः ॥

अ हृ शा 3/96-103

Scanned by CamScanner

Scanned with OKEN Scanner

शारिक प्रकृति लक्षण according to शार्ङ्गधर '23 (b)

(क) श्लेष्मप्रकृति

गम्भीरबुद्धि: स्थूलाँग: स्निग्धकेश: महाबल: |
स्वप्ने जलाशयलोकी श्लेष्मप्रकृतिको नर: || (शा पू 3/23)

गम्भीरबुद्धि : Deep rooted knowledge
स्थूलाँग : Stout body
स्निग्धकेश : oily hairs
महाबल : Good physical strength
स्वप्ने जलाशयलोकी - Dreams he sees water/waterbodies

पित्तप्रकृति

अकाल पलितत्वचिनौ क्रीमत्वदौ च शेषण: |
स्वप्ने ज्योतिर्विद्युत् दृष्टा पित्तप्रकृतिको नर: || (शा पू 3/22)

अकाल वली पलित : Early greying & wrinkles
क्रीमत्व : Good mental attributes
त्वचौ : ↑ perspiration
शेष : ↑ anger
स्वप्ने ज्योतिर्विद्युत् दृश्यति : Sees sparks & lightning in dream

अल्पकेश: कृशो रूक्षो वाचालश्चलमानस: |
आकाशचारी स्वप्नेषु वातप्रकृतिको नर: || (शा पू 3/21)

अल्पकेश : Less hairs
कृश : Lean
रूक्ष : Dry skin/hair etc
वाचाल : Talkative
चलमानस : Unstable mind
आकाशचारी स्वप्नेषु : In dream flying/floating in the sky

Scanned by CamScanner
Scanned with OKEN Scanner

Significance of knowledge of प्रकृति

Role in maintaining health (२०।२०२५)

प्रकृतिज्ञ आरोग्यम् ।

- It is indicative of healthy body.
- It helps to understand own health and thus to maintain the health.

eg. वातप्रकृति person should not use too much शीतद्रव्यs

Susceptability to disease

वातजाया आजीर्ण ---

- Here आजीर्ण means, person may be healthy in routine life (not sick/bed ridden), but he/she may suffer from minor ailments like skin cracks, शिरदुखी etc.
- Same way if a वातप्रकृति person indulges in excessive चिंतन (↑) उद्वेगादिक, he may develop चित्त related disorders in addition to his own "constitution related disturbances

→ Role in prognosis of disease

वातजानां प्रकृतिं ज्ञात्वा तदनुरूपं क्रियां चरेत् ।

(च सू 10)

While explaining मुख्यसाध्य लक्षणे, if aggravated दोष is of the nature of देहप्रकृति, it is मुख्यसाध्य

→ Planning of treatment

कायानां प्रकृतिं ज्ञात्वा तदनुरूपं क्रियां चरेत् ।

(सु शा 1/98)

Scanned by CamScanner

Scanned with OKEN Scanner

Treatment s/d be planned considering the प्रकृति

→ Modification of life style depending on शारीरिकप्रकृति

A person can maintain his health by getting proper tips about regimen, provided he understands his own प्रकृति.

→ A person s/d restricts the intake of दोष in good (~~in excess~~) opposite to their प्रकृति or condition of दोष.

eg. वातप्रकृति can take शीत उष्ण गंधा predominantly.
रक्तप्रकृति person s/d take all 6 रस ('षड्रसयुक्त').

→ In हेमन्तशिशिर (more strength) रक्तप्रकृति person are advised to take रस, वातप्रकृति can restrict वातप्रकोपक आहार (ie रस) as it may results in वातप्रकृति in him, more faster than others.

विपरीत गुण स्तब्धं श्लक्ष्णता विविक्तः।
रूक्षगुरुदिव्यं गात्रं श्लेष्मलानां प्रशस्यते॥
(च सू 7/41)

Clinical ~~signifia~~ Significance of श्लेष्मप्रकृति

1) श्लेष्मलानां श्लेष्मामिश्रितं अजस्राधिष्ठानं मन्दा भवत्यग्नयः।
(च वि 6/12)

In श्लेष्मप्रकृति person, the जठर अग्नि अधिष्ठान is under the control of श्लेष्म, so he has मन्दाग्नि.

Scanned by CamScanner

Scanned with OKEN Scanner

२) अतोबलस्यापि अतोबलप्रकोपान्यातोबलस्य ।
क्षिप्रं अतोबला प्रकोपमापद्यते, न तत्येतरौ दोषौ ॥
(च वि 6/8)

If a क्षिप्रकारी person uses कफप्रकोपक आहार/विहार, his कफदोष aggrevates immediately, not the other 2 दोषs clinical significance ने. P दोषप्रकृति

१) पित्तस्यापि पित्तप्रकोपान्यातोबलस्य क्षिप्रं
पित्तं प्रकोपमापद्यते ।
(च वि 6/11)

If a पित्तप्रकृति person indulges in पित्तप्रकोपकआहारविहार his पित्तदोष aggrevates immediately, not so the other दोषs

वातदोषप्रकृति person

१) वातस्यापि वातातिशयात् अन्यातोबलस्य विषमा गतिरजायत ।
(च वि 6/12)

In वातप्रकृति person, आहा अतिबलवान is subdued by वात, So he has विषमाग्नि.

२) तत्र वातस्य वातप्रकोपान्यातोबलस्य क्षिप्रं
वातः प्रकोपमापद्यते, न तत्येतरौ दोषौ ।
(च वि 6/16)

If a वातप्रकृति person indulges in वातप्रकोपकआहारविहार his वातदोष aggrevates immediately not the other 2 दोषs

Scanned by CamScanner

Scanned with OKEN Scanner

आकृतिक

While explaining शारीरिकसंरचनाविज्ञान, उदाहरण द्वारा explain the resemblance in the feature of construction and feature of animals [it can be in character, behaviour, activity, structure and mental attributes].

उदाहरण of दीर्घरूप

1 भेड़ (Goat)
2 शृंगाल (Fox)
3 खरगोश (Rabbit)
4 उन्दुर (Rat)
5 ऊष्ट्र (camel)
6 श्वान (Dog)
7 गृध्र (vulture)
8 काक (crow)
9. अश्व (Donkey)

उदाहरण of विनयरूप

1 व्याघ्र (Tiger)
2 भालुक (Bear)
3 मार्जारि (cat)
4 वानर (Monkey)
5 नकुल (Mongoose)
6 भुजंग (Snake)
7 उलूक (owl)

Scanned by CamScanner

Scanned with OKEN Scanner

आकृतवं कायप्रकृति

1. सिंह (Lion)
2. अश्व (Horse)
3. गज (Elephant)
4. गोवृष (Bull)
5. हंस (Swan)
6. गरुड (eagle)

Personality

- Biological
- Psychological
  - Extraversion
  - Neuroticism
  - Psychoticism

Somatotypes → Endomorphic
Mesomorphic.
Ectomorphic.

Scanned by CamScanner

Scanned with OKEN Scanner

मानसप्रकृति - Introduction & Types

त्रिविधं खलु सत्वं - शुद्धं, राजसं, तामसमिति।
तत्र शुद्धं अदोषमात्यन्तं कल्याणांशत्वात्,
राजसं अदोषमात्यन्तं रोषांशत्वात्,
तामसमपि अदोषमात्यन्तं मोहांशत्वात्।

(च शा 4/36)

Psyche is of 3 types

- शुद्ध (सत्वम्) → शुद्ध (pure) → कल्याणांशत्वात् (Beneficial fraction)
- राजस → अदोष (defect) → रोषांशत्वात् (Fraction of agitation)
- तामसिक → मोहांशत्वात् अदोषम् (defect) → मोहांशत्वात् (Fraction of ignorance)

सात्विकं शौचमाहिंसत्यं शुश्रूषाधर्मार्जिनम्।
राजसं बहुभाषित्वं मान शुद्ध कर्म मात्सरम्॥
तामसं भयमज्ञानं निद्रा आलस्यं विषादिता।

(अ हृ शा 3/7)

सात्विक :→ शुचि (कायिक, वाचिक, मानसिक)
आस्तिक्य
ऋजु (आर्जव)
मति (बुद्धि)
धर्म.

राजसिक :→ बहुभाषित्वं क्रोध मात्सर्य
मान कर्म

Scanned by CamScanner

Scanned with OKEN Scanner

गीतम → गोत्र आत्मन्-त्व निर्देश
अज्ञान विवादित्व

As Gotra exhebits the attributes on living body, mind represents its attributes in model of behaviour. Hence प्रकृति in contexts to psychological mould is realized by habits and mental reactions of an individual.

Types of मानसिकप्रकृति acc to आचार्य चरक (च शा 4/36)

मानसिक — 7 types → ① ब्रह्मसत्व
② आर्ष सत्व
③ ऐन्द्र सत्व
④ याम्य सत्व
⑤ वारुण सत्व
⑥ कौबेर सत्व
⑦ गन्धर्व सत्व

शारीरिक प्रकृति — 6 types → ① आसुर सत्व
② राक्षस सत्व
③ पैशाच सत्व
④ सर्प सत्व
⑤ प्रेत सत्व
⑥ शाकुन सत्व

वानस्पत्य → 3 types → ① पाशव सत्व
② वानस्पत्य सत्व
③ मत्स्य सत्व

Scanned by CamScanner

Scanned with OKEN Scanner